हाथी

हाथी आया झूम के
धरती को चूम के
कान हिलाता, दुम हिलाता
पत्ते तोड़कर आता है
और गन्ने खाता है।
देखो मुँह के अन्दर,
लम्बे गन्ने चबाकर।
इधर से उधर है जाता।
लेटकर अपनी छोटी-छोटी
आँखों से देखता
उसकी लम्बी सूँड से पानी पीता
हाथी बहुत ही मीठा

–नाम, पता नहीं लिखा

बुरा सपना

एक दिन प्रिया, मैं और मेरा भाई रेल लाइन के पास स्टंप लेने गए थे। उसके पास ही एक खाली मकान था। वहाँ एक आदमी था जो उस मकान को देख रहा था। हमने पूछा, हम अन्दर चले जाएँ। उसने कहा नहीं, अन्दर भूत है। अगर तुम अन्दर जाओगे तो तुम्हें बुरे सपने दिखेंगे। और फिर वो चला गया।

फिर मेरे भाई ने कहा कि वो आदमी झूठ बोल रहा है। मैंने उसे उसी घर से निकलते हुए देखा है। वह बोला, चलो अन्दर चलकर पता करते हैं।

लेकिन हमने कहा कि नहीं, नेहा और अक्षय के साथ चलते हैं। मेरा भाई मान गया।

अगले दिन हम अक्षय के साथ वहाँ गए। फिर हम अन्दर गए। वहाँ दीवार पर कुछ तस्वीरें बनी हुई थीं। वहाँ कुछ लिखा भी था। मुझे डर नहीं लगा। लेकिन प्रिया कुछ डर गई थी। फिर हम घर आ गए। मेरे भाई ने उस रात बुरा सपना देखा।

– ऐश्वर्या भास्कर, 8 वर्ष, पता नहीं लिखा

– प्रियांशी मालवीय, दूसरी, शाहपुर, म. प्र.

कूनी ने सुनाई कहानी-

एक दफा की बात है......
एक बुलबुल एक झाड़ी पर बैठी थी।
उस झाड़ी के पास ही एक घर था।
उस घर के पास एक जामुन का पेड़ था।
उस जामुन के पेड़ के पास ही एक गुलमोहर का पेड़ था।
उस गुलमोहर के पेड़ के पास ही एक अमलतास का पेड़ था।
उस अमलतास के पेड़ के पास ही एक आमों वाला पेड़ था।

बुलबुल झाड़ी पर बैठी सोच रही थी......
मैं बैठूँ किस पेड़ पर..... चर्र.. चर्र.. चर्र
मैं गाऊँ किस पेड़ पर..... चर्र.. चर्र.. चर्र।

–कूनी, धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश

–प्रखर गुप्ता, चौथी, भोपाल, म. प्र.

चिड़िया का घोंसला

एक दिन मैं घर की सफाई कर रही थी तो अलमारी के ऊपर एक चिड़िया का घोंसला दिखाई दिया। मुझे पता नहीं था कि उसमें चिड़िया के अण्डे भी हैं। झाड़ू लगते ही घोंसला नीचे गिर गया और उसमें से दो अण्डे टूट गए।

पास ही एक पेड़ पर चिड़िया बैठी थी। वह चूँ-चूँ-चूँ .... चूँ-चूँ-चूँ ..... करती हुई आई और बेचैनी से पंख फड़फड़ा कर टूटे हुए घोंसले के पास उड़ने लगी। उसका चूँ-चूँ-चूँ करना लगातार जारी था। चिड़िया का शोर सुनकर अक्षर भी वहाँ पर आ गया और पूछने लगा, "मम्मा, क्या हो गया? चिड़िया इतनी चूँ-चूँ-चूँ क्यों कर रही है?" मैंने उसे बताया, "बेटा, मैं सफाई कर रही थी, और मैंने यह घोंसला देखा। मैंने सोचा कि चिड़िया ना जाने कहाँ-कहाँ का कचरा लाकर अपने घर में इकट्ठा करती रहेगी, इसलिये मैंने घोंसला गिरा दिया। उसमें उसके अण्डे भी थे जो टूट गए। इसीलिए वह इतनी आवाज़ कर रही है।"

अक्षर ने घोंसला और टूटे हुए अण्डों को देखा तो बहुत दुखी हो गया। बोला, "अब तो उन अण्डों से बच्चे भी नहीं निकल पाएँगे। पापा ने कहा था कि इसी सफेद वाले में से बच्चे बनते हैं। मैं तो रोज़ चिड़िया को देखता था। उसने अपने खेत से घास के तिनके लाकर इतना अच्छा घोंसला बनाया था।" थोड़ी देर रुककर वह फिर बोला, "मम्मा! आपने उसका घोंसला क्यों गिरा दिया?" और रोने लगा।

मैंने उसे समझाते हुए कहा, "बेटा, चिड़िया को अपना घोंसला बाहर बनाना चाहिए था ना? घर में कचरा नहीं करना चाहिए।"

अक्षर ने तपाक से जवाब दिया, "तो क्या वह बाहर पेड़ पर घोंसला बनाएगी?" मैंने कहा, "हाँ।"

अक्षर ने कहा, "लेकिन बाहर तो बहुत धूप होती है न! चिड़िया ने सोचा होगा कि अगर धूप में घोंसला बनाऊँगी तो मेरे बच्चे बीमार हो जाएँगे। इसलिए उसने अपने घर में घोंसला बनाया। जब मैं धूप में खेलता हूँ तो आप भी तो कहते हो न कि अक्षर! धूप में मत खेलो, बीमार हो जाओगे। चिड़िया ने भी तो यही सोचा होगा न मम्मा! अभी होगा न मम्मा ! अभी चिड़िया आपसे बहुत नाराज़ हो जाएगी और भूत बनकर आपके सपने में आएगी और आपको चोंच से मारेगी। इसलिए आप उससे माफी माँगो।" और ज़िद करके अक्षर ने मुझ से चिड़िया से माफी मँगवाकर ही साँस ली। फिर हमने वह घोंसला एक छोटी-सी टोकनी में रखकर टाँग दिया।

–एक सच्ची घटना पर गायत्री और उसके चार वर्षीय बेटे अक्षर के बीच हुए संवाद के आधार पर यह कहानी लिखी गई है। गायत्री और अक्षर होशंगाबाद में रहते हैं।

रात हुई बिल्ली आई

रात हुई बिल्ली आई
खा गई सारी दूध-मलाई।
खाकर जब बाहर आई
सब बच्चों ने करी पिटाई।

कुत्ता भौंका दूर से
बिल्ली देखे घूर के।
कुत्ता दौड़ा दूर से
बिल्ली भागे घूर के।

रात हुई बिल्ली आई
खा गई सारी दूध-मलाई।

– महेश, छठी, कानपुर, उ. प्र.

– तज़मीनुन्निसा, मुम्बई, महाराष्ट्र

सुनहरा दिन, सुनहरा दिन

सुनहरा दिन, सुनहरा दिन
कैसा है तू?
आता-जाता रहता है तू।
कभी-कभी तू बारिश लाता,
कभी-कभी तू हवा लाता।
और तू अच्छा दिन लाता।

– अवनीन्द्र कुमार राय, कोलकाता, प. बंगाल

मेरा पन्ना

—कमल, पता नहीं लिखा

सूरज चाचा

सूरज चाचा, सूरज चाचा,
निकलते तुम क्यों पूरब से,
चाहो तो संसार देख लो।
निकलो तुम जहाँ मन करे।।

चाहे निकलो पश्चिम से,
या उत्तर या दक्षिण से।।
चाहे तो संसार देख लो,
निकलो तुम जहाँ मन करे।

पूरब का दरवाजा खोले।
आते हो तुम गोले-गोले।।
पूरब में ऐसी क्या बात है।
जिससे तुम्हारा वहीं वास है।।

इतनी ही सुन सूरज बोले।
बड़े भोले हो तुम ओ भाई।।
पूरब में ही सब रहते है।
मेरे पिता, बहन और भाई।।

Kr. Ashish Singh, cl. VI,
AWIC - VGKK Youth Library
Tezu Arunachal Prada

—आशीष सिंह, छठी, अरुणाचल प्रदेश

मछली मिली बिन्ना को

एक थी जलपरी। उसका नाम था परी। पानी में इधर-उधर घूमती रहती थी। माँ बोली - बेटा इधर-उधर मत घूम। कोई मछुआरा तुझे ले जाएगा। पर वह तो सुनती नहीं थी। एक कान से सुनती और दूसरे से निकाल देती। फिर एक दिन सुबह-सुबह जलपरी तैर रही थी। तब एक मछुआरे ने जाल बिछाया। परी उस जाल को नहीं देख पाई और जाल में फँस गई और रोने लगी। माँ, बचाओ, बचाओ। पर जब तक उसकी माँ वहाँ आई, वो वहाँ नहीं थी। जब मछुआरे ने उसे देखा तो उसे वह सुन्दर मछली लगी। उसने उस मछली को एक्वेरियम में दे दिया। और उसकी जगह उसने 100 रुपए भी ले लिए और फिर से मछली पकड़ने चला गया। थोड़ी देर बाद बिन्ना अपने पापा के साथ मछली के एक्वेरियम में गई। उसने अपने पापा से कहा कि वह मछली मुझ को चाहिए, जो मछुआरे ने दी थी। बिन्ना ने वह मछली ले ली और बहुत खुश हुई। पापा को धन्यवाद दिया और उस मछली का नाम भी जूनियर बिन्ना रखा।

—अमृषा जैन, छठी, इन्दौर, म. प्र.

—कीमया नेहरा, 5 साल, नासिक, महाराष्ट्र